Vol 5 Issue 6 July 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 6 | July - 2015

'प्रगतिवादी काव्य' में व्यंग्य चेतना

मीनू रानी धर्मपत्नी श्री रणवीर सिंह

सारांश

प्रगतिवादी विचारधार मार्क्सवाद से अनुप्राणित थी। भारतीय राजनीति के क्षेत्र में मार्क्सवादी चेतना के अभ्युदय के साथ–साथ हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी चेतना का उद्‌भव हुआ। डॉ. मदान के अनुसार– "प्रगतिवाद का प्रेरणास्त्रोत मार्क्सवादी जीवन–दर्शन है जिसके अनुसार जीवन तथा जगत की व्याख्या द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर की जाती है। इसी जीवन–दृष्टि से प्रेरित प्रगतिवादी काव्य की विशेषताओं को पंजीकृत भी किया गया है–जैसे इनमें जन–जीवन की अभिव्यक्ति है, हताश भावना का विरोध है, धारती की गरिमा है, शोषित के प्रति क्रोध तथा घृणा की अभिव्यंजना है, दीन–भाव का तिरस्कार है। व्यंग्य का महत्व है, वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए संघर्ष है, मरणशील एवं गलनषील सामन्ती तथा पूंजीवादी संस्कृति का खण्डन है।" इस काव्यधारा में शोषित के प्रति क्रोध तथा घृणा की भावना ने ही व्यंग्य का स्वरूप ग्रहण है। छायावाद के जीवन–काल में ही इस काव्य–धारा ने कवियों के मानस को आन्दोलित कर दिया था। उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द का सारा साहित्य इसी भावधारा से प्रेरित था।

SHORT PROFILE

Meenu Rani Dharmpatni Shri Ranbir Singh

प्रास्ताविका:

निराला की व्यंग्य चेतना के मूल में यही विचारधारा कार्यरत थी। उत्तर–छायावादी काल में नागार्जुन और मुक्तिबोध की व्यंग्य कविताएं मुख्यतः इसी भावभूमि की उपज हैं। प्रगतिवादी विचारधारा ने ही सर्वप्रथम साहित्य में यथार्थवाद की स्थापना की तथा सदियों से स्थापित आदर्शवाद का खण्डन किया। इसी जीवन–दृष्टि से प्रेरित होकर सर्वप्रथम कवियों ने अपने काव्य में दी–हीन मानव को प्रतिष्ठित किया और अब तक प्रतिष्ठित समाज को अपने प्रहार का लक्ष्य बनाया। इस काव्य–धारा की मूल चेतना ही व्यंग्यात्मक थी। इससे अनुप्रणित कवियों ने जब भी साम्राज्यवादी शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाई या वर्ग–सघर्ष की समस्याओं का चित्रण किया या धार्मिक मान्यताओं को अस्वीकार किया, उनका स्वर स्वतः ही व्यंग्यात्मक हो गया है। शेरजंग गर्ग के अनुसार– "हिन्दी के प्रगतिवादी कवि द्वितीय युद्ध के समय ये ही साम्राज्यवादी शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाने के साथ–साथ अन्य समस्याओं, वर्ग–संघर्ष, स्वस्थ समाजिकता और धर्म एवं ईश्वर की खोखली मान्यताओं को विषय बनाकर उन पर प्रहार करने में व्यक्त थे। प्रगतिवादियों ने मार्क्सवाद के अनुसार वर्ग असन्तुलन की पीड़ा को व्यक्त किया, पूंजीवाद के राक्षस द्वारा हड़पी जा रही जनाकांक्षाओं की विभीषिका का चित्रांकन किया तथा मनुष्य के खुली वायु में सांस लेने में बाधा उत्पन्न कर रही रूढ़ मान्यताओं के कैदखाने से मनुष्य को निकालने का प्रयत्न किया।"

उत्तर–छायावादी काव्य को व्यंग्य की दिशा की ओर उन्मुख करने का मुख्य श्रेय इसी विचारधारा को हैं। प्रयोगवाद ने इसके पश्चात् ही साहित्य में पदार्पण किया, इसके अतिरिक्त प्रयोग शिल्पगत था वस्तुगत नहीं। नयी कविता बहुत बाद की स्थिति थी। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने नयी कविता पर भी प्रगतिवाद के प्रभाव को स्वीकार किया है– "जीवन के निम्नतम तथा तिरस्कृत स्तरों का स्पर्श सम्भतः प्रथम बार प्रगतिवादी साहित्य ने कया था। कटु यथार्थ का आग्रह उसकी अपनी विशेषता थी। हिन्दी की नयी कविता इस विशेषता को कुछ परिवर्तन के साथ स्वीकार किया है। प्रगतिवाद में जिस व्यापक मानवीय सहानुभूति की ओर संकेत था वह नवलेखन में कुछ और पुष्ट हुई है। साथ ही उसमें जीवन के प्रति एक संतुलित भाव भी जागृत हुआ है। इस दृष्टि से प्रगतिवाद के रचनात्मक तत्वों का अधिकाधिक परिष्करण नवलेखन में हो सका है।" नवलेखन से यहां अभिप्राय गद्य और कविता दोनों से ही है। सत्य यह है कि प्रगतिवादी विचारधारा से प्रेरित होकर ही नयी कविता ने जीवन के निकटतम यथार्थ स्तरों का स्पर्श किया है। प्रगतिवादी धारा की व्यंग्यात्मक चेतना ने ही प्रयोगवाद और नयी कविता के व्यंग्य को दिशा दी है।

नागार्जुन के काव्य की मूल चेतना ही व्यंग्यात्मक है। उनकी यह व्यंग्यात्मक दृष्टि मुख्यतः प्रगतिवादी विचारधारा से प्रेरित है। डॉ. मदान के अनुसार – "नागार्जुन ने प्रगतिवादी जीवनदृष्टि को सहज रूप में आत्मसात् किया है...नागार्जुन मूलतः कथाकार है। इसलिए वह अपनी अनुभूतियों को प्रायः कथात्मक अभिव्यक्ति देते हैं। इनकी रचनाओं में देहाती जीवन को सजीव चित्रण है। धरती की सौंधी गन्ध है। शोषण का व्यंग्यात्मक खण्डन है। इनका व्यंग्य कहीं–कहीं इतना तीखा हो जाता है किवह

औचित्य की सीमा का उल्लघंन कर बैइता है।" निर्धन व दीन–हीन मनुष्य के प्रति अत्याधिक करूणा और तथाकथित अभिजात्य के प्रति बेहद आक्रोश ने उनके व्यंग्य को इतना तीखा बना दिया हैं। देश में व्याप्त भूखमरी और निर्धनता के प्रति उनका हृदय इतना द्रवित है कि वे 'काली माई' का भी आक्षेप द्वारा उपहास करते हैं–

मुण्डमाल के लिए गरीबों पर निगाह है,
धनपतियों के लिए दया की खुली राह है।
धन पिचाश का लहू नहीं अच्छा लगता है,
व्ह औरों की बलि देकर तुमको ठगता है।"

'काली माई' रूपी ईश्वर को भी निर्धनों का ही लहू मीठा लगता है। काली माई के साथ–साथ यहां पूंजीपतियों पर भी आक्षेप किया गया है, किवे दीन–हीन मनुष्यों की बलि चढ़ाकर काली माई को भी धोखा देते हैं। ऊंचे–ऊंचे पदों पर आसीन बुद्धिजीवी सरकारी अफसर, जिनपर जनता की सुख–सुविधा का ध्यान रखने वाले विभागों की जिम्मेदारी है, वे जनता के हितों के प्रति बिल्कुल ही उदासीन हैं, उनका सारा ध्यान, अपने ही स्वार्थों में आत्मकेन्द्रित हैं। नागार्जुन ने प्रहार के लिए मुख्यतः व्यंग्यात्मक चित्रण का ही श्स्त्र के रूप में प्रयोग किया है। विडम्बनात्मक स्थिति उजागर करके भी उन्होंने लक्ष्य पर चोट की है। वैदग्ध्य आक्षेप और कटाक्ष का भी यंत्र–तंत्र प्रयोग किया हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में सन् 1945 के पश्चात् ही व्यंग्य का स्वर प्रस्फूटित होता है। 'गीत फरोश' संकलन में सन् 30 से 47 तक की कवितायें संग्रहीत हैं। संकलन की अंतिम कविता 'गीत फरोश' 1947 की लिखी हुई है और इस संग्रह की यही कविता व्यंग्यात्मक है। 'गीत फरोश' में कवि ने उन कवियों पर तीखा व्यंग्य किया है जो पैसे के लिए फरमाइश के अनुसार गीत और कविताएं लिखकर उनका सौदा करते हैं। 'बुद्धि का घेरा' में मिश्र जी ने कोरे बुद्धिवाद पर आक्षेप किया है कि आज हर वस्तु की नापतोल हम बुद्धि से करते हैं, हमारे जीवन में निष्ठा, श्रद्धा, स्नेह और ममता का कोई स्थान नहीं रह गया है। इसी प्रकार 'हम' मे ंआज के 'नेत्रहीन' व्यक्ति का व्यंग्यात्मक चित्रण है। 'नये साल की बधाई' में अंग्रेजी सभ्यता से प्रभावित आभिजात्य वर्ग पर विडम्बना और वैदग्ध्य के द्वारा प्रहार किया है। मिश्र जी ने मुख्यतः गांधीजी के पथभ्रष्ट अनुयायी–सत्ताधिकारियों तथा शहरी आभिजात्य वर्ग पर प्रहार किया है। यन्त्र–तन्त्र उन्होंने कवि, कलाकार, आलोचक तथा पूंजीपतियों और साम्यवादियों पर भी चोट की है। प्रहार के लिए उन्होंने लगभग व्यंग्य के सभी रूपों का प्रयोग किया है। विडम्बना और विडम्बनात्मक स्थिति दर्शाकर, दोनों ही रूपों के द्वारा आघात कियो हैं। वैदग्ध्य–व्यंग्यात्मक चित्रण का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। आक्षेप तथा अपकर्ष के द्वारा भी उपहास किया गया है।

प्रभाकर माचवे जी के काव्य में सन् 1938 से ही व्यंग्य का स्वर दृष्टव्य हैं। धीरे–धीरे यह स्वर विकसित होता चला गया है और बाद में उनके काव्य का प्रमुख स्वर बन गया है। सन् 1943 में प्रकाशित 'तार सप्तक' में ही उनकी कई कविताएं व्यंग्यात्मक हैं। 'देशोद्धारकों से' में वे 'बाहर गर्म लू में झुलसती अर्धनग्न पीड़ा' से बेखबर अपने हरम में क्रीड़ारत नेताओं का आक्षेप तथा भर्त्सना द्वारा उपहास करते हैं। 'निम्न मध्यवर्ग' में निम्नमध्यवर्गीय समाज के दयनीय और संघर्षशील जीवन का मार्मिकता से पूर्ण व्यंग्यात्मक चित्रण किया हैं। माचवे जी के कथ्य में सपाटबयानी है। उन्होंने लिख है– "विद्वानों की वैसी कंटी–छंटी, साफ–सुथरी, ठण्डी और सपाट हिन्दी से मुझे ऊब आती है– शायद व भाषा व्यंग्य–निबन्धों के लिए उपयुक्त नहीं है, सरकारी अखबारों के सम्पादकीयों या परीक्षार्थियों की उत्तर–पुस्तिकाओं के लिए चाहे उपयुक्त हो।" अपनी व्यंग्य कविताओं में वे 'विद्वानों जैसी भाषा' के विरूद्ध है, इसीलिए उनके व्यंग्य काव्य में अपेक्षाकृत वैदग्ध्य का अभाव रहा हैं। उन्होंने मुख्यतः व्यंग्यात्मक चित्रण तथा विडम्बनात्मक स्थिति दर्शाकर लक्ष्यों पर चोट की हैं। आक्षेप, भर्त्सना और कटाक्ष के द्वारा भी उन्होंने चारों ओर व्याप्त असंगतियों का निडरता से उपहास किया हैं।

भारतभूषण अग्रवाल की कविताएं प्रेम और भावुकता के रोमानी संसार से निकलकर धीरे–धीरे व्यंग्य की ओर अग्रसर हुई हैं। सन् 1943 से लेकर 1970 तक की काव्य–यात्रा के मध्य उनका व्यंग्य–स्वर तीव्रतर होता गया है और उनके नवीनतम काव्य–संकलन 'एक उठा हुआ हाथ' की कविताओं के मूल में उनकी व्यंग्यात्मक चेतना परिव्याप्त है। 'तार सप्तक' में उनकी कुछ कविताओं का स्वर व्यंग्यात्मक था। 'अपने कवि से' में भारतभूषण अग्रवाल ने परम्परावादी कवियों पर आक्षेप किया है तथा 'मसूरी के प्रति' में 'अबल कन्धों' पर भार लादने वाले वैभव के मद में झूमने वाले अभिजात्य का भी आक्षेप के द्वारा उपहास किया है। 'ओ प्रस्तुत मन' के वक्तव्य मे ंइस संकलन की कविताओं के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है– "इनमें आपको मध्यवर्गीय मन की क्षुद्रता, स्वर्थपरता और अदूरदर्शिता पर निर्मम व्यंग्य भी मिलेगा। यह व्यंग्य मेरी ईमानदारी का अंतिम प्रमाण है।" व्यंग्य को ही अपनी ईमानदारी का अंतिम प्रमाण मानने वाले भारतभूषण अग्रवाल की बाद की व्यंग्य–कविताओं ने उनकी इस ईमानदारी को सिद्ध कर दिया हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की काव्यदृष्टि प्रारम्भ से ही व्यंग्यात्मक रही है और धीरे–धीरे यह उनके समूचे काव्य पर छा गई है। 'काठ की घण्टियां' से लेकर 'गर्म हवाएं' तक की काव्य–यात्रा के मध्य उनका व्यंग्य तीव्रतर होता गया है। 'काठ की घण्टियां' में वे युद्ध की विभीषिका के प्रति चिन्तित थे तो 'गर्म हवाएं' मे ंराजनीतिकों के दोहरे चरित्र पर क्षुब्ध हैं। 'तीसरा सप्तक' के वक्तव्य में उन्होंने लिखा है– "जब चारों ओर लोग इस बात पर कमर बांधे हों कि वे आपकी बात नहीं समझेंगे, तब आपके सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं : या तो चुप रहें, अपनी बात न कहें या फिर उसे इस ढंग से कहें कि सुनने वाले तिलमिला उठें, उनकी कलई उतर जाए।" केशव चन्द्र वर्मा की काव्य दृष्टि मूलतः व्यंग्यात्मक है। उनके कविता–संकलन 'वीणापाणि के कम्पाउण्ड में' की लगभग सभी कविताएं किसी न किसी व्यंग्य रूप के माध्यम से किसी न किसी लक्ष्य पर प्रहार करती हैं। उन्होंने मुख्यतः राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों तथा साहित्यिक क्षेत्र की असंगतियों पर प्रहार किये हैं। पन्द्रह अगस्त सन् 1947 को प्राप्त स्वतंत्रता की जो छीछालेदर जनता के अधिनायकों ने की है कवि उस पर बेहद क्रुद्ध है और व्यंग्य के सशक्त रूपों, वैदग्ध्य, विडम्बना और व्यंग्यत्मक चित्रण के द्वारा जननायकों को भेदकर उन्होंने अपने आक्रोश को अभिव्यक्त किया है।

व्यंग्य रूपों की दृष्टि से इन कवियों ने वैदग्ध्य, व्यंग्यात्मक चित्रण तथा विडम्बनात्मक स्थिति उजागर करके ही प्रहार किया है। तथाकथित महिमामय पुरूषों को पशुओं के नामों की संज्ञा देकर, अपकर्ष के द्वारा भी उनका उपहास करके अपने आक्रोश को प्रकट किया है। आक्षेप, कटाक्ष तथा भर्त्सना के द्वारा उपहास बहुत कम किया गया है। खिल्ली, पैरोडी आदि अन्य रूपों

का प्रयोग नगण्य मात्र हुआ है। इन कवियों के लक्ष्य पर डिम्बना के द्वारा चोट न करके विडम्बनात्मक स्थिति उत्पन्न करके ही विशेष रूप से नग्न वास्तविकताओं का निरावरण किया हैं। जिस कवि की व्यंग्य कविताओं में आक्रोश की जितनी तीव्रता रही है, व्यंग्य ने उतना ही सशक्त रूप ग्रहण किया है। जिन कवियों की व्यंग्य कविताएं मार्मिकता से ओत–प्रोत रही हैं, उनका व्यंग्य तीखा और पैना नहीं बन सका हैं, न ही उनके व्यंग्य ने सशक्त रूप धारण किये हैं। जिन कविताओं के मूल में बेहद आक्रोश रहा हैं, एक–एक कविता में कई–कई रूप उभरकर एक साथ आये हैं।

lanHkZ lwph %

1.मदान, इन्द्रनाथ, कविता और कविता, पृ0 20
2.गर्ग, शेरंग, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, पृ0 241–242
3.चतुर्वेदी, रामस्वरूप , हिन्दी नवलेखन, पृ0 31
4.मदान, इन्द्रनाथ, कविता और कविता, पृ0 21–22
5.नागार्जुन, प्यासी पथराई आंखें, पृ0 36
6.माचवे, प्रभाकर, धर्मयुग, 10 नवम्बर, 1967, पृ0 22
7.अग्रवाल, भारतभूषण, ओ प्रस्तुत मन, पृ0 10
8.सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, अज्ञेय, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, (सम्पा.) तीसरा सप्तक, पृ0 329

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org